नानी उसे प्यार से सिलिया ही कहती थी। बड़े भैया ने अपनी शिक्षा प्राप्त सूझ-बूझ के साथ उसका नाम शैलजा रखा था। माँ-पिताजी की वह सिल्लो रानी थी।

सन् १९७० की बात है। सिलिया ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ रही थी। साँवली-सलौनी, मासूम-भोली, सरल व गंभीर स्वभाव वाली सिलिया। स्वस्थ देह के कारण वह अपनी उम्र से कुछ ज्यादा ही लगती थी। लोग उसकी शादी के विषय में चर्चा करने लगे थे। उसी साल हिन्दी अखबार 'नई दुनिया' में एक विज्ञापन छपा – 'शूद्रवर्ण की वधू चाहिए।' मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के जाने माने युवा नेता सेठीजी, एक अछूत कन्या के साथ विवाह करके, समाज के सामने एक आदर्श रखना चाहते थे। उनकी केवल एक ही शर्त थी कि लड़की कम से कम मैट्रिक हो।

गाँव के बहुत से पढ़े लिखों ने, ब्राह्मणों, बनियों ने सिलिया की माँ को सलाह दी – ''सिलिया की माँ, तुम्हारी सिलिया मैट्रिक पढ़ रही है, बहुत होशियार है, समझदार भी है। तुम उसका फोटो, परिचय, नाम, पता लिखकर भेज दो। तुम्हारी बेटी के भाग्य खुल जायेंगे – राज करेगी। सेठी जी बहुत बड़े आदमी हैं। तुम्हारी बेटी की किस्मत अच्छी है...''

सिलिया की माँ अधिक जिरह में न पड़कर केवल इतना कहती – ''हाँ भैय्या जी'', ''हाँ दादाजी, सोच विचार करेंगे।''

सिलिया के साथ पढ़ने वाली सहेलियाँ उसे छेड़ती, हँसती। मगर सिलिया इस बात का कोई सिर-पैर नहीं समझ पाती। उसे बड़ा अजीब लगता – ''क्या कभी ऐसा भी हो सकता है...?''

इस विषय में घर में भी चर्चा होती। रिश्तेदार और पड़ोसी यही कहते – ''फोटो भिजवा दो, नाम पता लिखकर भेज दो।'' तब सिलिया की माँ अपने वालों को अच्छी तरह समझा कर कहती – ''नहीं भैय्या, यह सब बड़े लोगों के चोचले हैं। आज समाज को और सबको दिखाने के लिये हमारी बेटी से शादी कर लेंगे और कल छोड़ दिया तो...?'' हम गरीब लोग उनका क्या कर लेंगे। अपनी इज़्ज़त अपने समाज में रहकर भी हो सकती है। उनकी दिखावे की चार दिन की इज़्ज़त हमें नहीं चाहिए। हमारी बेटी उनके परिवार और समाज में वैसा मान-सम्मान नहीं पा सकेगी। न ही फिर हमारे घर की ही रह जायेगी। न इधर की न उधर की।

हम से भी दूर कर दी जायेगी। हम तो नहीं देंगे अपनी बेटी को। हमीं उसको खूब पढ़ायेंगे-लिखायेंगे। उसकी किस्मत में होगा तो इससे ज्यादा मान-सम्मान वह खुद पा लेगी... अपनी किस्मत वह खुद बना लेगी...।''

माँ की बातों को सुन सिलिया के मन में आत्मविश्वास जाग उठा। सिलिया को वह दिन आज भी याद है जब – बारह साल की सिलिया डरी सहमी सी एक कोने में खड़ी थी। मामी अपनी बेटी मालती को बाल पकड़कर मार रही थी, साथ ही जोर-जोर से चिल्लाकर कह रही थी। ''...क्यों री, तुझे नहीं मालूम, अपन वा कुएँ से पानी भर सके हैं? क्यों चढ़ी तू कुएँ पर, क्यों रस्सी बाल्टी को हाथ लगाई...'' और वाक्य पूरा होने के साथ ही दो-चार झापड़ घूँसे और बरस पड़ते मालती पर। बेचारी मालती दोनों बाहों में अपना मुँह छुपाये चीख-चीख कर रो रही थी, साथ ही कहती जाती थी – ''... ओ बाई, ओ माँ, माफ कर दे, अब ऐसा कभी नहीं करूँगी...''

मामी का गुस्सा और मालती का रोना देखकर सिलिया स्वयं को अपराधी महसूस कर रही थी। वह अपनी सफ़ाई में बहुत कुछ कहना चाहती थी मगर इस घमासान प्रकरण में उसकी आवाज़ धीमी पड़ जाती थी। मामी को थोड़ा शांत होता देख सिलिया ने साहस बटोरा – ''मामी, मैंने तो मालती को मना किया था मगर वह मानी ही नहीं। कहने लगी – जीजी प्यास लगी है, पानी पियेंगे। मैंने कहा कोई देख लेगा, तो कहने लगी अरे, गरमी की भरी दोपहरी में कौन देखने आयेगा। बाजार से यहाँ तक दौड़ते आये हैं, प्यास के मारे दम निकल रहा है ...''

मामी बिफर कर बोली – ''घर कितना दूर था, मर तो न जाती। मर ही जाती तो अच्छा रहता। इसके कारण उसने कितनी बातें सुनाई..'' मामी सिर पर हाथ रख कर बैठ गयी और बहुत देर तक मालती को कोसती रही।

सिलिया अपने पैरों के पास की ज़मीन देखने लगी। सच बात थी, गाडरी मुहल्ला के जिस कुएँ से मालती ने पानी निकालकर पिया था, वहाँ से बीस-पच्चीस कदम पर ही मामा-मामी का घर है। जिसकी रस्सी बाल्टी और कुएँ को छू कर मालती ने अपवित्र कर दिया था – वह औरत बकरियों के रेवड़ पालती है। गाडरी मुहल्ले के अधिकांश घरों में भेड़ों,

बकरियों के पालने-बेचने का व्यवसाय किया जाता है। गाडरी मुहल्ले से लगकर ही आठ-दस घर भंगी जाति के हैं। सिलिया के मामा-मामी यहीं रहते हैं।

मालती सिलिया की हम उम्र है मगर हौंसला और निडरता उसमें बहुत ज्यादा है। जिस काम को नहीं करने की नसीहत उसे दी जाये, उसी काम को करके वह खतरे का सामना करना चाहती। सिलिया गंभीर और सीधे सरल स्वभाव की आज्ञाकारी लड़की है।

मालती को रोते देख उसे खराब जरूर लगा, मगर वह इस बात को समझ रही थी कि इसमें मालती की ही गलती है – ''जब हमें पता है कि हम अछूत दूसरों के कुएँ से पानी नहीं भर सकते तो फिर वहाँ जाना ही क्यों?''

वह बकरी वाली, कैसी चिल्ला रही थी – ''अरी बाई, दौड़ो री ... जा मोड़ी को समझाओ, देखो तो, मना करने के बाद भी कुएँ से पानी भर रही है ... हमारी रस्सी बाल्टी खराब कर दई जाने ...''

और मामी को डाँटते हुए उसने कितनी बातें सुनाई थी – ''क्यों बाई, जई सिखाओ हो तुम अपने बच्चों को? एक दिन हमारे मूँड पर मूतने की कह देना ... तुम्हारे नजदीक रहते हैं तो क्या हमारा धरम नहीं है? ... का मरजी है तुम्हारी? साफ साफ कह दो...''

मामी गिड़गिड़ा रही थी – ''बाई, माफ कर दो, इतनी बड़ी हो गयी है मगर अकल नहीं आई उसको। कितना तो मारूँ हूँ फिर भी नहीं समझे...'' और मामी वहीं से मालती को मारती हुई घर लायी थी।

''बेचारी मालती'' सिलिया सोच रही थी – ''भगवान उसे जल्दी ही अकल दे देंगे तब वह ऐसे काम नहीं किया करेगी।''

इसके एक साल पहले की बात है। पाँचवी कक्षा के टूर्नामेन्ट हो रहे थे। खेल कूद की स्पर्धाओं में सिलिया ने भी भाग लिया था। अपने सहपाठियों और कक्षा शिक्षक के साथ वह भी तहसील के स्कूल में गयी थी। आसपास अनेक गाँवों के विद्यार्थी टूर्नामेन्ट में भाग लेने आये थे। दूसरे दिन सिलिया की स्पर्धाएँ आरम्भ में ही होने से जल्दी खत्म हो गयीं। वह लम्बी दौड़ और कुर्सीदौड़ स्पर्धाओं में प्रथम आई थी। वह अपनी खो-खो टीम की कॅप्टन थी और उनकी खो-खो टीम भी उसी के कारण जीती थी। खेलकूद के शिक्षक गोकुलप्रसाद ठाकुर जी ने सबके सामने

उसकी बहुत तारीफ की थी, साथ ही उससे पूछा था –

''यहाँ तहसील में तुम्हारे रिश्तेदार रहते होंगे – तुम वहाँ जाना चाहती हो? हमें पता बता दो, हम तुम्हें वहाँ पहुँचा देंगे।''

सिलिया मामा-मामी के घर का पता जानती थी मगर शिक्षकों के समक्ष उनका पता बताने में उसे संकोच हो रहा था, शर्म के कारण वह कुछ नहीं बता पायी। उसने संकोच के साथ कहा – ''मुझे यहाँ किसी का भी पता मालूम नहीं है।'' तब सर ने उसकी सहेली हेमलता से कहा था – ''हेमलता, तुम इसे भी अपनी बहन के घर ले जाओ। शाम को सभी एक साथ गाँव लौटेंगे, तब तक वहाँ आराम कर लेगी।''

हेमलता ठाकुर सिलिया के साथ ही पाँचवी कक्षा में पढ़ती थी। उसकी बहन की ससुराल तहसील में थी। उनका घर तहसील के स्कूल के पास ही था। हेमलता सिलिया को लेकर अपनी बड़ी बहन के घर आई। बहन की सास ने हँसकर बातें की, हेमलता को पानी का गिलास दिया। दूसरा गिलास हाथ में लेकर सिलिया के बारे में पूछने लगी ''कौन है...? किसकी बेटी है...? कौन ठाकुर है....?''

सिलिया कुछ कह न सकी। हेमलता ने कहा – ''मौसीजी मेरी सहेली है, हमारे साथ ही आई है।'' बहन की सास उसे गौर से देखते हुए विचार करती रही।

हेमलता ने बताया – ''इसके मामा-मामी यहाँ रहते हैं मगर इसे उनका पता मालूम नहीं है।''

मौसीजी ने हेमलता से सिलिया की जाति पूछी। हेमलता ने धीरे से बता दिया। जाति का नाम सुनकर मौसीजी चौंक गई। फिर स्वयं को संयत करके सिलिया से पूछा ''गाडरी मुहल्ला के पास रहते हैं...?''

तब मौसीजी ने अतिरिक्त प्रेम जताते हुए कहा – ''कोई बात नहीं बेटी, हमारा भैया तुम्हें साइकिल पे बिठाके वहाँ छोड़ आयेगा।'' ऐसा कहते हुए मौसीजी पानी का गिलास लेकर अंदर चली गईं।

मौसी जानती थी कि उसे प्यास लगी है फिर भी जाति का नाम सुनकर वह पानी का गिलास वापस ले गई। सिलिया को प्यास लगी थी। मगर वह मौसीजी से पानी माँगने की हिम्मत नहीं कर सकी। पानी माँगने पर क्या वह देने से इंकार कर देती? सिलिया को यह प्रश्न साल रहा था।

मौसीजी के बेटे ने उसे गाडरी मुहल्ले के पास छोड़ दिया था।

सिलिया रास्ते भर कुढ़ती आ रही थी। ''आखिर उसे प्यास लगी थी तो उसने मौसीजी से पानी माँग कर क्यों नहीं पिया।'' तभी उसे याद आया – ''मौसी उसकी जाति के नाम से कैसी चौंक गई थी।'' मौसी के चेहरे का भाव उसके आँखों में तैर गया।

''कितने मुखौटे चढ़ाकर रखते हैं लोग?''

सिलिया को देखकर मामा-मामी, मालती और सभी लोग बहुत खुश हुए थे। उससे बड़े उल्लास के साथ मिले थे मगर सिलिया हेमलता की मौसीजी से मिली उमस को भूल नहीं पा रही थी। शाम के समय मामा ने उसे स्कूल पहुँचा दिया था।

बरसों पुरानी घटनाएँ मन मस्तिष्क में बार-बार कौंधकर उथल-पुथल मचा देती हैं। सिलिया का स्वभाव चिन्तनशील बनता जा रहा था। परम्परा से अलग, नये-नये विचार उसके मन में आने लगे थे। वह सोचती – ''आखिर मालती ने ऐसा कौनसा जुर्म किया था? प्यास लगी, पानी निकालकर पी लिया।''

फिर वह सोचती – ''हेमलता की मौसी से वह पानी क्यों नहीं ले सकी थी?''

और अब यह विज्ञापन-उच्च वर्ण का नवयुवक, सामाजिक कार्यकर्ता, जनता का नेता जातिभेद मिटाने के लिए शूद्रवर्ण की अछूत कन्या से विवाह ... समाज के सामने एक आदर्श रखने की बात ...। यह सेठी जी महाशय का ढोंग-आडम्बर है या सचमुच वे समाज की परम्परा को बदलनेवाले, सामाजिक बदलाव की क्रांति लानेवाले महापुरुष हैं?

उसके मन में यह विचार भी आया – ''अगर उसे अपने जीवन में ऐसे किसी महापुरुष का साथ मिला तो वह अपने जाति समुदाय के लिए बहुत कुछ कर सकेगी।''

लेकिन, ''क्या कभी ऐसा हो सकता है?'' यह प्रश्न उसके मन से हटता नहीं था। साथ ही माँ के यथार्थपूर्ण अनुभवी कथन पर भी उसे विश्वास था। मध्यप्रदेश की ज़मीन में सन् १९७० तक ऐसी फसल नहीं उगी थी जो एक छोटे गाँव की अछूत मानी जानेवाली भोली-भाली लड़की के मन में अपना ऐसा विश्वास जगा सके।

और फिर दूसरों की दया पर सम्मान...? अपने निजत्व को खोकर दूसरों की शतरंज का मोहरा बनकर रह जाना ... बैसाखियों पर

चलते हुए जीना ...? नहीं, कभी नहीं...। हम क्या इतने भी लाचार हैं, आत्मसम्मान रहित हैं? हमारा अपना भी तो कुछ अहंभाव है। उन्हें हमारी जरूरत है, हमको उनकी जरूरत नहीं। हम उनके भरोसे क्यों रहें ... अपना सम्मान हम खुद बढ़ायेंगे...।

सिलिया ने मन ही मन दृढ़ संकल्प किया – ''मैं बहुत आगे तक पढूँगी, पढ़ती रहूँगी। उन सभी परम्पराओं के मूल कारणों का पता लगाऊँगी, जिन्होंने हमें समाज में अछूत बना दिया है। मैं विद्या, बुद्धि और विवेक से अपने आपको ऊँचा साबित करके रहूँगी। किसी के सामने झुकूँगी नहीं। न ही कभी अपना अपमान सहन करूँगी।''

सिलिया मन ही मन इन बातों का चिंतन मनन करने लगी। एक दिन अपनी माँ और नानी के सामने उसने बड़े दृढ़ निश्चय के साथ कहा – ''मैं शादी नहीं करूँगी। मुझे बहुत आगे तक पढ़ना है।''

माँ और नानी अपनी बेटी को ध्यान से देखती रह गयी। नानी खुश होकर बोली – ''शादी हो या न हो, मगर तू खूब पढ़ाई कर और इतनी बड़ी बन जा कि – बड़ी जात के बड़े लोगों के बराबर सब तेरा सम्मान करने लगें।'' माँ मन ही मन मुस्करा रही थी। सोच रही थी – ''मेरी सिल्लो रानी को मैं खूब पढ़ाऊँगी ...।''

'अछूत कन्या के साथ विवाह' के विज्ञापन के साथ सिलिया की आँखों में वह घटना बार-बार तैर जाती थी, जब प्यास से उसका कंठ सूख रहा था और उसकी ओर बढ़ता हुआ पानी का गिलास एकाएक केवल इसलिये वापिस हो गया कि वह अछूत है। हिन्दू होते हुए भी हिन्दू नहीं है। प्यास ने उसे उतना विचलित नहीं किया था जितना इस अपमान जनक व्यवहार ने – ''कौन जात है?'' पूछा गया यह सवाल उसके कानों में निरंतर हथौड़े मारता रहता।

कुत्ता-बिल्ली उस घर में बेरोकटोक आ जा रहे थे पर उसे दहलीज पर ही हाथ के इशारे से रोक दिया गया था। इस व्यवस्था को मिटाने के लिए क्या कुछ भी नहीं हो सकता? क्या जीवन भर ऐसे ही जातिगत भेदभाव की प्रताड़ना के दुख भोगने पडेंगे? कदम-कदम पर अपमान के घूँट पीने पडेंगे? यह सब सोचकर उसके मस्तिष्क की नसें फड़कने लगती थीं।

सिलिया सोचने लगी थी – ''कैसे बदला जा सकता है इस

हालात को? कैसे हम अपनी इज्ज़त और बराबरी का दर्जा पा सकते हैं? और 'झाड़ू'? ... कम्बख्त यह तो जानवरों से बदतर जीवन कायम रखने का हमारे लिये दुष्चक्र है। किसने थमा दी हमारी जाति के हाथों में ये झाड़ू? इस समाज में पैदा होना - नहीं होना तो हमारे हाथ में नहीं था परन्तु इस अपमानजनक गुलामी के चिन्ह को छोड़ना तो हमारे हाथ में है। यह हम कर सकते हैं...''

वह दृढ़ता से सोचने लगी - ''हाँ, यह हम जरूर कर सकते हैं।''

उसकी आँखों में अब एक चमक थी। हीनता और दीनता के भाव तो न जाने कबके जा चुके थे? वह मन ही मन सोच रही थी ''झाड़ू नहीं कलम। हाँ, कलम ही उसके समाज का भाग्य बदलेगी।'' उसने सोचा – ''वह खूब पढ़ेगी। सम्मान के उच्च शिखर पर पहुँचेगी। वह एक चिनगारी है जो मशाल बनकर अपने समाज की प्रगति के मार्ग को प्रकाशित करेगी।''

सिलिया ने तय किया, वह जीवनभर कोशिश करेगी कि समाज इन सब बातों को समझे, उनके मर्म को जाने। सम्मान और अपमान के भेद को समझे और सही रूप में सम्मान का हकदार बने।

जहाँ चाह होती है, वहाँ राह खुद बनने लगती है। यदि मन में दृढ़ निश्चय हो तो कठिन से कठिन रास्ता भी पार किया जा सकता है। समय बदलता रहता है, लोग उसकी रफ्तार को समझ नहीं पाते हैं। जो इस बात को समझ लेता है वह समय के साथ चलते हुए अपनी मंजिल पा लेता है। सिलिया समय के साथ कदम से कदम मिला कर चलने लगी। उसने अपनी मंजिल को जान लिया। वह देश के कोने-कोने में जाकर सामाजिक जागृति का कार्य करने लगी।

जब हम सिर्फ अपने लिए सोचते हैं तब अपने दायरे तक ही सीमित रहते हैं। जिनका सोच बड़ा होता है वे जात-बिरादरी, समाज और देश की सीमा से भी ऊपर उठ जाते हैं। सिलिया अपनी बिरादरी के साथ उन सबके लिए सोचने लगी थी जो सामाजिक विषमता, छुआछूत भेदभाव, अन्याय, अत्याचार और शोषण से पीड़ित हैं, जो अधिकारों से वंचित हैं, ज्ञान से वंचित हैं, जो अपने इतिहास, अपने वर्तमान और अपने भविष्य से अनजान हैं।

लगभग बीस वर्ष के बाद... देश की राजधानी के सबसे प्रख्यात

सभागृह में एक प्रतिष्ठित साहित्य संस्था द्वारा एक महिला को सम्मानित किया जा रहा है। दलित मुक्ति आन्दोलन की सक्रिय कार्यकर्ता, विदुषी ... समाजसेवी ... कवयित्री ... साहित्य जगत की प्रसिद्ध लेखिका आदि अनेक विशेषणों का प्रयोग उसके लिए किया जा रहा है...

मंत्री महोदय ने शाल, सम्मानपत्र, सम्मान स्मृति चिन्ह और पुष्पमाला से उस महिला का, तालियों की गड़गड़ाहट के बीच स्वागत किया। स्वागत के उत्तर में महिला ने अपना भाषण आरंभ किया...

सुंदर सवर्ण एक युवती तत्परता के साथ उसके पीछे तश्तरी में शीतल जल का गिलास आदरभाव से लिये खड़ी है। भाषण देते हुए बीच में दो घूँट पानी पीकर महिला पुरानी स्मृतियों में क्षणभर के लिए खो गयी। फिर उसने गर्व के साथ अपने आसपास देखा, सामने बैठे विशाल जनसमूह को देखा और परिवर्तनवादी विचारों से परिपूर्ण अपना भाषण जारी रखा...

वह महिला कोई और नहीं सिलिया थी।

कठिन शब्दार्थ :

जिरह = प्रश्न; चोचले = नखरे; रेवड़ = भेड़-बकरी का झुंड; मोड़ी = लड़की; जई = यही; मूँड = सिर; सालना = खटकना, दुख पहुँचना; मुखौटे = नकाब, नकली चेहरा; कौंधना = चमकना; ढोंग = पाखंड; बैसाखी = लंगड़ों की लाठी।

I) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) नानी शैलजा को किस नाम से पुकारती थी?

२) सन् १९७० में सिलिया कौन-सी कक्षा में पढ़ रही थी?

३) किनकी बातों को सुनकर सिलिया के मन में आत्मविश्वास जाग उठा?

४) मालती ने किस मुहल्ले के कुएँ से पानी निकालकर पिया था?

५) सिलिया किस दौड़ में प्रथम आयी थी?

६) हेमलता ठाकुर सिलिया के साथ किस कक्षा में पढ़ती थी?
७) जहाँ चाह होती है वहाँ क्या बनने लगती है?
८) प्रतिष्ठित साहित्य संस्था ने किसको सम्मानित किया?

II) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१) हिन्दी अखबार 'नई दुनिया' में छपे विज्ञापन के बारे में लिखिए।
२) सिलिया की माँ ने गाँव वालों की सलाह को क्यों नहीं माना?
३) सिलिया के स्वभाव का परिचय दीजिए।
४) हेमलता की मौसी ने सिलिया के साथ कैसा बर्ताव किया?
५) सिलिया ने मन ही मन क्या दृढ़ संकल्प किया?
६) सिलिया ने अपने संकल्प को किस प्रकार साकार किया?

* * * * * *

६. दोपहर का भोजन

— अमरकांत

लेखक परिचय :

हिन्दी के प्रख्यात कथा-शिल्पी अमरकांत का जन्म १९२५ ई. में बलिया (उ.प्र.) में हुआ। प्रबुद्ध और सुलझे हुए कहानीकारों में आपका नाम शीर्ष स्थान पर है। आपने 'मनोरमा' पाक्षिक पत्रिका का संपादन करते हुए अपनी सूझ-बूझ और कथा-चेतना का परिचय दिया। आपको २००९ ई. में ज्ञानपीठ पुरस्कार से विभूषित किया गया। आप किसी वाद या फार्मूले के तहत अपनी कहानी गढ़ते नहीं। आपकी अधिकांश कहानियाँ सही अर्थ में 'रचना' हैं।

आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं – 'जिन्दगी और जोंक', 'देश के लोग', 'मौत का नगर', 'सूखा पत्ता', 'दीवार' और 'आँगन' आदि।

एक निर्धन परिवार के रहन-सहन का यथार्थ प्रस्तुतीकरण इस कहानी का मूल स्वर है। घर का खर्च चलाना और भोजन तक का नसीब न हो पाना ही प्रस्तुत कहानी के रूप को प्रस्तुत करता है। अमरकांत ने प्रतीकात्मकता का प्रयोग करते हुए निर्धनता के उस पक्ष को उकेरा है जो इस देश की लगभग ८० प्रतिशत जनता के घर-घर में व्याप्त है। बातों-बातों में बहुत सी बातें ऐसी भी यहाँ हो गई हैं कि मन भर भर जाता है। कहानी का अंत बहुत ही मार्मिक है।

मध्यवर्गीय परिवार के संघर्षमय जीवन से साक्षात्कार कराने के उद्देश्य से प्रस्तुत कहानी चयनित है।

सिद्धेश्वरी ने खाना बनाने के बाद चूल्हे को बुझा दिया और दोनों घुटनों के बीच सिर रखकर शायद पैर की उँगलियाँ या जमीन पर चलते चींटे-चींटियों को देखने लगी। अचानक उसे मालूम हुआ कि बहुत देर से उसे प्यास लगी है। वह मतवाले की तरह उठी और गगरे से लोटा-भर पानी लेकर गट-गट चढ़ा गई। खाली पानी उसके कलेजे में लग गया और वह 'हाय राम' कहकर वहीं जमीन पर लेट गई।

आधे घंटे तक वहीं उसी तरह पड़ी रहने के बाद उसके जी में जी आया। वह बैठ गई, आँखों को मल-मलकर इधर-उधर देखा और फिर उसकी दृष्टि ओसारे में अध-टूटे खटोले पर सोए अपने छह वर्षीय लड़के प्रमोद पर जम गई। लड़का नंग-धड़ंग पड़ा था। उसके गले तथा छाती की हड्डियाँ साफ दिखाई देती थीं। उसके हाथ-पैर बासी ककड़ियों की तरह सूखे तथा बेजान पड़े थे और उसका पेट हंडिया की तरह फूला हुआ था। उसका मुख खुला हुआ था और उस पर अनगिनत मक्खियाँ उड़ रही थीं।

वह उठी, बच्चे के मुँह पर अपना एक फटा, गंदा ब्लाउज डाल दिया और एक-आध मिनट सुन्न खड़ी रहने के बाद बाहर दरवाजे पर जाकर किवाड़ की आड़ से गली निहारने लगी। बारह बज चुके थे। धूप अत्यंत तेज थी और कभी एक-दो व्यक्ति सिर पर तौलिया या गमछा रखे हुए या मजबूती से छाता ताने हुए, फुर्ती के साथ लपकते हुए-से गुजर जाते।

दस-पंद्रह मिनट तक वह उसी तरह खड़ी रही, फिर उसके चेहरे पर व्यग्रता फैल गई और उसने आसमान तथा कड़ी धूप की ओर चिंता से देखा। एक-दो क्षण बाद उसने सिर को किवाड़ से काफी आगे बढ़ाकर गली के छोर की तरफ निहारा, तो उसका बड़ा लड़का रामचंद्र धीरे-धीरे घर की ओर सरकता नजर आया।

उसने फुर्ती से एक लोटा पानी ओसारे की चौकी के पास नीचे रख दिया और चौके में जाकर खाने के स्थान को जल्दी-जल्दी पानी से लीपने-पोतने लगी। वहाँ पीढ़ा रखकर उसने सिर को दरवाजे की ओर घुमाया ही था कि रामचंद्र ने अंदर कदम रखा।

रामचंद्र आकर धम-से चौकी पर बैठ गया और फिर वहीं बेजान-सा लेट गया। उसका मुँह लाल तथा चढ़ा हुआ था, उसके बाल अस्त-

व्यस्त थे और उसके फटे-पुराने जूतों पर गर्द जमी हुई थी।

सिद्धेश्वरी की पहले हिम्मत नहीं हुई कि उसके पास आए और वहीं से वह भयभीत हिरनी की भाँति सिर उचका-घुमाकर बेटे को व्यग्रता से निहारती रही। किंतु, लगभग दस मिनट बीतने के पश्चात भी जब रामचंद्र नहीं उठा, तो वह घबरा गई। पास जाकर पुकारा – 'बड़कू, बड़कू!' लेकिन उसके कुछ उत्तर न देने पर डर गई और लड़के की नाक के पास हाथ रख दिया। साँस ठीक से चल रही थी। फिर सिर पर हाथ रखकर देखा, बुखार नहीं था। हाथ के स्पर्श से रामचंद्र ने आँखें खोलीं। पहले उसने माँ की ओर सुस्त नजरों से देखा, फिर झट-से उठ बैठा। जूते निकालने और नीचे रखे लोटे के जल से हाथ-पैर धोने के बाद वह यंत्र की तरह चौकी पर आकर बैठ गया।

सिद्धेश्वरी ने डरते-डरते पूछा, ''खाना तैयार है। यहीं लगाऊँ क्या?''

रामचंद्र ने उठते हुए प्रश्न किया, ''बाबू जी खा चुके?''

सिद्धेश्वरी ने चौके की ओर भागते हुए उत्तर दिया, ''आते ही होंगे।''

रामचंद्र पीढ़े पर बैठ गया। उसकी उम्र लगभग इक्कीस वर्ष की थी। लंबा, दुबला-पतला, गोरा रंग, बड़ी-बड़ी आँखें तथा होंठों पर झुर्रियाँ।

वह एक स्थानीय दैनिक समाचार पत्र के दफ्तर में अपनी तबीयत से प्रूफरीडरी का काम सीखता था। पिछले साल ही उसने इंटर पास किया था।

सिद्धेश्वरी ने खाने की थाली सामने लाकर रख दी और पास ही बैठकर पंखा करने लगी। रामचंद्र ने खाने की ओर दार्शनिक की भाँति देखा। कुल दो रोटियाँ, भर-कटोरा पनियाई दाल और चने की तली तरकारी।

रामचंद्र ने रोटी के प्रथम टुकड़े को निगलते हुए पूछा, ''मोहन कहाँ है? बड़ी कड़ी धूप हो रही है।''

मोहन सिद्धेश्वरी का मँझला लड़का था। उम्र अट्ठारह वर्ष थी और वह इस साल हाईस्कूल का प्राइवेट इम्तहान देने की तैयारी कर रहा था। वह न मालूम कब से घर से गायब था और सिद्धेश्वरी को स्वयं पता

नहीं था कि वह कहाँ गया है।

किंतु सच बोलने की उसकी तबीयत नहीं हुई और झूठ-मूठ उसने कहा, ''किसी लड़के के यहाँ पढ़ने गया है, आता ही होगा। दिमाग उसका बड़ा तेज है और उसकी तबीयत चौबीस घंटे पढ़ने में ही लगी रहती है। हमेशा उसी की बात करता रहता है।''

रामचंद्र ने कुछ नहीं कहा। एक टुकड़ा मुँह में रखकर भरा गिलास पानी पी लिया गया, फिर खाने लग गया। वह काफी छोटे-छोटे टुकड़े तोड़कर उन्हें धीरे-धीरे चबा रहा था।

सिद्धेश्वरी भय तथा आतंक से अपने बेटे को एकटक निहार रही थी। कुछ क्षण बीतने के बाद डरते-डरते उसने पूछा, ''वहाँ कुछ हुआ क्या?''

रामचंद्र ने अपनी बड़ी-बड़ी भावहीन आँखों से अपनी माँ को देखा, फिर नीचा सिर करके कुछ रुखाई से बोला, ''समय आने पर सब ठीक हो जाएगा।''

सिद्धेश्वरी चुप रही। धूप और तेज होती जा रही थी। छोटे आँगन के ऊपर आसमान में बादल में एक-दो टुकड़े पाल की नावों की तरह तैर रहे थे। बाहर की गली से गुजरते हुए एक खड़खड़िया इक्के की आवाज आ रही थी। और खटोले पर सोए बालक की साँस का खर-खर शब्द सुनाई दे रहा था।

रामचंद्र ने अचानक चुप्पी को भंग करते हुए पूछा, ''प्रमोद खा चुका?''

सिद्धेश्वरी ने प्रमोद की ओर देखते हुए उदास स्वर में उत्तर दिया, ''हाँ, खा चुका।''

''रोया तो नहीं था ?''

सिद्धेश्वरी फिर झूठ बोल गई, ''आज तो सचमुच नहीं रोया। वह बड़ा ही होशियार हो गया है। कहता था, बड़का भैया के यहाँ जाऊँगा। ऐसा लड़का...''

पर वह आगे कुछ न बोल सकी, जैसे उसके गले में कुछ अटक गया। कल प्रमोद ने रेवड़ी खाने की जिद पकड़ ली थी और उसके लिए डेढ़ घंटे तक रोने के बाद सोया था।

रामचंद्र ने कुछ आश्चर्य के साथ अपनी माँ की ओर देखा और

फिर सिर नीचा करके कुछ तेजी से खाने लगा।

थाली में जब रोटी का केवल एक टुकड़ा शेष रह गया, तो सिद्धेश्वरी ने उठने का उपक्रम करते हुए प्रश्न किया, ''एक रोटी और लाती हूँ?''

रामचंद्र हाथ से मना करते हुए हड़बड़ाकर बोल पड़ा, ''नहीं-नहीं, जरा भी नहीं। मेरा पेट पहले ही भर चुका है। मैं तो यह भी छोड़नेवाला हूँ। बस, अब नहीं।''

सिद्धेश्वरी ने जिद की, ''अच्छा आधी ही सही।''

रामचंद्र बिगड़ उठा, ''अधिक खिलाकर बीमार डालने की तबीयत है क्या? तुम लोग जरा भी नहीं सोचती हो। बस, अपनी जिद। भूख रहती तो क्या ले नहीं लेता?''

सिद्धेश्वरी जहाँ-की-तहाँ बैठी ही रह गई। रामचंद्र ने थाली में बचे टुकड़े से हाथ खींच लिया और लोटे की ओर देखते हुए कहा, ''पानी लाओ।''

सिद्धेश्वरी लोटा लेकर पानी लेने चली गई। रामचंद्र ने कटोरे को उँगलियों से बजाया, फिर हाथ को थाली में रख दिया। एक-दो क्षण बाद रोटी के टुकड़े को धीरे-से हाथ से उठाकर आँख से निहारा और अंत में इधर-उधर देखने के बाद टुकड़े को मुँह में इस सरलता से रख लिया, जैसे वह भोजन का ग्रास न होकर पान का बीड़ा हो।

मँझला लड़का मोहन आते ही हाथ-पैर धोकर पीढ़े पर बैठ गया। वह कुछ साँवला था और उसकी आँखें छोटी थीं। उसके चेहरे पर चेचक के दाग थे। वह अपने भाई ही की तरह दुबला-पतला था, किंतु उतना लंबा न था। वह उम्र की अपेक्षा कहीं अधिक गंभीर और उदास दिखाई पड़ रहा था।

सिद्धेश्वरी ने उसके सामने थाली रखते हुए प्रश्न किया, ''कहाँ रह गए थे बेटा? भैया पूछ रहा था।''

मोहन ने रोटी के एक बड़े ग्रास को निगलने की कोशिश करते हुए अस्वाभाविक मोटे स्वर में जवाब दिया, ''कहीं तो नहीं गया था। यहीं पर था।''

सिद्धेश्वरी वहीं बैठकर पंखा डुलाती हुई इस तरह बोली, जैसे स्वप्न में बड़बड़ा रही हो, ''बड़का तुम्हारी बड़ी तारीफ कर रहा था। कह

रहा था, मोहन बड़ा दिमागी होगा, उसकी तबीयत चौबीसों घंटे पढ़ने में ही लगी रहती है।'' यह कहकर उसने अपने मँझले लड़के की ओर इस तरह देखा, जैसे उसने कोई चोरी की हो।

मोहन अपनी माँ की ओर देखकर फीकी हँसी हँस पड़ा और फिर खाने में जुट गया। वह परोसी गई दो रोटियों में से एक रोटी कटोरे की तीन-चौथाई दाल तथा अधिकांश तरकारी साफ कर चुका था।

सिद्धेश्वरी की समझ में नहीं आया कि वह क्या करे। इन दोनों लड़कों से उसे बहुत डर लगता था। अचानक उसकी आँखे भर आईं। वह दूसरी ओर देखने लगी।

थोड़ी देर बाद उसने मोहन की ओर मुँह फेरा, तो लड़का लगभग खाना समाप्त कर चुका था।

सिद्धेश्वरी ने चौंकते हुए पूछा, ''एक रोटी देती हूँ?''

मोहन ने रसोई की ओर रहस्यमय नेत्रों से देखा, फिर सुस्त स्वर में बोला, ''नहीं।''

सिद्धेश्वरी ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, ''नहीं बेटा, मेरी कसम, थोड़ी ही ले लो। तुम्हारे भैया ने एक रोटी ली थी।''

मोहन ने अपनी माँ को गौर से देखा, फिर धीरे-धीरे इस तरह उत्तर दिया, जैसे कोई शिक्षक अपने शिष्य को समझाता है, ''नहीं रे, बस, अव्वल तो अब भूख नहीं। फिर रोटियाँ तूने ऐसी बनाई हैं कि खाई नहीं जातीं। न मालूम कैसी लग रही हैं। खैर, अगर तू चाहती ही है, तो कटोरे में थोड़ी दाल दे दे। दाल बड़ी अच्छी बनी है।''

सिद्धेश्वरी से कुछ कहते न बना और उसने कटोरे को दाल से भर दिया।

मोहन कटोरे को मुँह से लगाकर सुड़-सुड़ पी रहा था कि मुंशी चंद्रिका प्रसाद जूतों को खस-खस घसीटते हुए आए और राम का नाम लेकर चौकी पर बैठ गए। सिद्धेश्वरी ने माथे पर साड़ी को कुछ नीचे खिसका लिया और मोहन दाल को एक साँस में पीकर तथा पानी के लोटे को हाथ में लेकर तेजी से बाहर चला गया।

दो रोटियाँ, कटोरा-भर दाल, चने की तली तरकारी। मुंशी चंद्रिका प्रसाद पीढ़े पर पालथी मारकर बैठे, रोटी के एक-एक ग्रास को इस तरह चुभला-चबा रहे थे, जैसे बूढ़ी गाय जुगाली करती है। उनकी उम्र

पैंतालीस वर्ष के लगभग थी, किंतु पचास-पचपन के लगते थे। शरीर का चमड़ा झूलने लगा था, गंजी खोपड़ी आईने की भाँति चमक रही थी। गंदी धोती के ऊपर अपेक्षाकृत कुछ साफ बनियान तार-तार लटक रही थी।

मुंशी जी ने कटोरे को हाथ में लेकर दाल को थोड़ा सुड़कते हुए पूछा, ''बड़का दिखाई नहीं दे रहा?''

सिद्धेश्वरी की समझ में नहीं आ रहा था कि उसके दिल में क्या हो गया है – जैसे कुछ काट रहा हो। पंखे को जरा और जोर से घुमाती हुई बोली, ''अभी-अभी खाकर काम पर गया है। कह रहा था, कुछ दिनों में नौकरी लग जाएगी। हमेशा, 'बाबू जी, बाबू जी' किए रहता है। बोला, बाबू जी देवता के समान हैं।''

मुंशी जी के चेहरे पर कुछ चमक आई। शरमाते हुए पूछा, ''ऐं, क्या कहता था कि बाबू जी देवता के समान हैं? बड़ा पागल है।''

सिद्धेश्वरी पर जैसे नशा चढ़ गया था। उन्माद की रोगिणी की भाँति बड़बड़ाने लगी, ''पागल नहीं है, बड़ा होशियार है। उस जमाने का कोई महात्मा है। मोहन तो उसकी बड़ी इज्जत करता है। आज कह रहा था कि भैया की शहर में बड़ी इज्जत होती है, पढ़ने-लिखनेवालों में बड़ा आदर होता है और बड़का तो छोटे भाइयों पर जान देता है। दुनिया में वह सुबकुछ सह सकता है, पर यह नहीं देख सकता कि उसके प्रमोद को कुछ हो जाए।''

मुंशी जी दाल लगे हाथ को चाट रहे थे। उन्होंने सामने की ताक की ओर देखते हुए हँसकर कहा, ''बड़का का दिमाग तो खैर काफी तेज है, वैसे लड़कपन में नटखट भी था। हमेशा खेल-कूद में लगा रहता था, लेकिन यह भी बात थी कि जो सबक मैं उसे याद करने को देता था, उसे बर्राक रखता था। असल तो यह कि तीनों लड़के काफी होशियार हैं। प्रमोद को कम समझती हो?'' यह कहकर वह अचानक जोर से हँस पड़े।

मुंशी जी डेढ़ रोटी खा चुकने के बाद एक ग्रास से युद्ध कर रहे थे। कठिनाई होने पर एक गिलास पानी चढ़ा गए। फिर खर-खर खाँसकर खाने लगे।

फिर चुप्पी छा गई। दूर से किसी आटे की चक्की की पुक-पुक आवाज सुनाई दे रही थी और पास की नीम के पेड़ पर बैठा कोई पंडूक लगातार बोल रहा था।

सिद्धेश्वरी की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहे। वह चाहती थी कि सभी चीजें ठीक से पूछ ले। सभी चीजें ठीक से जान ले और दुनिया की हर चीज पर पहले की तरह धड़ल्ले से बात करे। पर उसकी हिम्मत नहीं होती थी। उसके दिल में जाने कैसा भय समाया हुआ था।

अब मुंशी जी इस तरह चुपचाप दुबके हुए खा रहे थे, जैसे पिछले दो दिनों से मौन-व्रत धारण कर रखा हो और उसको कहीं जाकर आज शाम को तोड़नेवाले हों।

सिद्धेश्वरी से जैसे नहीं रहा गया। बोली, ''मालूम होता है, अब बारिश नहीं होगी।''

मुंशी जी ने एक क्षण के लिए इधर-उधर देखा, फिर निर्विकार स्वर में राय दी, ''मक्खियाँ बहुत हो गई हैं।''

सिद्धेश्वरी ने उत्सुकता प्रकट की, ''फूफा जी बीमार हैं, कोई समाचार नहीं आया।''

मुंशी जी ने चने के दानों की ओर इस दिलचस्पी से दृष्टिपात किया, जैसे उनसे बातचीत करनेवाले हों। फिर सूचना दी, ''गंगाशरण बाबू की लड़की की शादी तय हो गई। लड़का एम.ए. पास है।''

सिद्धेश्वरी हठात चुप हो गई। मुंशी जी भी आगे कुछ नहीं बोले। उनका खाना समाप्त हो गया था और वे थाली में बचे-खुचे दानों को बंदर की तरह बीन रहे थे।

सिद्धेश्वरी ने पूछा, ''बड़का की कसम, एक रोटी देती हूँ। अभी बहुत-सी हैं।''

मुंशी जी ने पत्नी की ओर अपराधी के समान तथा रसोई की ओर कनखी से देखा, तत्पश्चात किसी छँटे उस्ताद की भाँति बोले, ''रोटी? रहने दो, पेट काफी भर चुका है। अन्न और नमकीन चीजों से तबीयत ऊब भी गई है। तुमने व्यर्थ में कसम धरा दी। खैर, कसम रखने के लिए ले रहा हूँ। गुड़ होगा क्या?''

सिद्धेश्वरी ने बताया कि हँडिया में थोड़ा-सा गुड़ है।

मुंशी जी ने उत्साह के साथ कहा, ''तो थोड़े गुड़ का ठंडा रस बनाओ, पीऊँगा। तुम्हारी कसम भी रह जाएगी, जायका भी बदल जाएगा, साथ-ही-साथ हाजमा भी दुरुस्त होगा। हाँ, रोटी खाते-खाते नाक में दम आ गया है।'' यह कहकर वे ठहाका मारकर हँस पड़े।

मुंशी जी के निबटने के पश्चात सिद्धेश्वरी उनकी जूठी थाली लेकर चौके की जमीन पर बैठ गई। बटलोई की दाल को कटोरे में उँड़ेल दिया, पर वह पूरा भरा नहीं। छिपुली में थोड़ी-सी चने की तरकारी बची थी, उसे पास खींच लिया। रोटियों की थाली को भी उसने पास खींच लिया। उसमें केवल एक रोटी बची थी। मोटी-भद्दी और जली उस रोटी को वह जूठी थाली में रखने जा रही थी कि अचानक उसका ध्यान ओसारे में सोए प्रमोद की ओर आकर्षित हो गया। उसने लड़के को कुछ देर तक एकटक देखा, फिर रोटी को दो बराबर टुकड़ों में विभाजित कर दिया। एक टुकड़े को तो अलग रख दिया और दूसरे टुकड़े को अपनी जूठी थाली में रख लिया। तदुपरांत एक लोटा पानी लेकर खाने बैठ गई। उसने पहला ग्रास मुँह में रखा और तब न मालूम कहाँ से उसकी आँखों से टप-टप आँसू चूने लगे।

सारा घर मक्खियों से भन-भन कर रहा था। आँगन की अलगनी पर एक गंदी साड़ी टँगी थी, जिसमें पैबंद लगे हुए थे। दोनों बड़े लड़कों का कहीं पता नहीं था। बाहर की कोठरी में मुंशी जी औंधे मुँह होकर निश्चिंतता के साथ सो रहे थे, जैसे डेढ़ महीने पूर्व मकान-किराया-नियंत्रण विभाग की क्लर्की से उनकी छँटनी न हुई हो और शाम को उनको काम की तलाश में कहीं जाना न हो...।

कठिन शब्दार्थ :

गगरा = घड़ा; ओसारा = बरामदा; खटोला = खटिया, चारपाई; गर्द = धूल; पीढ़ा = लकड़ी का छोटा आसन; पनियाई = पानी जैसी; चेचक = शीतला रोग; जुगाली = पशुओं का निगले हुए चारे को गले से थोड़ा-थोड़ा निकालकर दाँत से चबाने की क्रिया; अव्वल = प्रथमत:; उन्माद = पागल; बर्राक = पूर्णत: अभ्यस्त; बीनना = चुनना; कनखी = तिरछी नज़र; छटा = धूर्त; छिपुली = छोटी थाली; अलगनी = कपड़े टाँगने की रस्सी।

I) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) रामचंद्र कितने वर्ष का था?
२) प्रूफरीडरी का काम कौन सीख रहा था?
३) सिद्धेश्वरी के मँझले लड़के का नाम लिखिए।
४) सिद्धेश्वरी के छोटे लड़के की उम्र कितनी थी?
५) मुंशी चंद्रिका प्रसाद कितने साल के लगते थे?
६) किसकी शादी तय हो गई थी?
७) मुंशी जी की तबीयत किससे ऊब गई थी?
८) मुंशी जी की छँटनी किस विभाग से हो गई थी?
९) 'दोपहर का भोजन' कहानी के लेखक कौन हैं?

II) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१) सिद्धेश्वरी के परिवार का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
२) बीमार प्रमोद की हालत कैसी थी?
३) रामचंद्र का परिचय दीजिए।
४) मँझले लड़के मोहन के रूप-रंग और स्वभाव के बारे में लिखिए।
५) सिद्धेश्वरी की आँखों से आँसू क्यों टपकने लगे?
६) मुंशी चंद्रिका प्रसाद की लाचारी का वर्णन कीजिए।

* * * * * *

प्रश्न पत्र का ढाँचा

प्रश्न I और II	:	गद्य भाग से	:	25 अंक
प्रश्न III	:	पद्य भाग से	:	20 अंक
प्रश्न IV	:	अपठित भाग से	:	15 अंक
प्रश्न V	:	व्याकरण से	:	25 अंक
प्रश्न VI	:	रचना से	:	15 अंक
			कुल	**100 अंक**

I	(अ)	एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए : (छ: प्रश्न)	6X1=6
	(आ)	किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखिए (पाँच में से तीन)	3X3=9
II	(अ)	निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहे (चार प्रश्न)	4X1=4
	(आ)	ससन्दर्भ स्पष्टीकरण कीजिए (चार में से दो)	2X3=6
III	(अ)	एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए (छ: प्रश्न) (मध्ययुगीन काव्य में से दो तथा आधुनिक कविता में से चार)	6X1=6
	(आ)	किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लिखिए (चार में से दो) (मध्ययुगीन काव्य में से एक तथा आधुनिक कविता में से तीन)	2X3=6
	(इ)	ससन्दर्भ भाव स्पष्ट कीजिए : (मध्ययुगीन काव्य – दो में से एक आधुनिक कविता – दो में से एक)	2X4=8
IV	(अ)	एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए : (छ: प्रश्न)	6X1=6
	(आ)	किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखिए (छ: में से तीन)	3X3=9

V	(अ)	वाक्य शुद्ध कीजिए (पाँच वाक्य)	5X1=5
	(आ)	रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए (कारक चिन्ह या उचित शब्द)	5X1=5
	(इ)	मुहावरों को अर्थ के साथ जोड़कर लिखिए :	4X1=4
	(ई)	सूचनानुसार काल बदलिए (तीन वाक्य)	3X1=3
	(उ)	अन्य लिंग रूप लिखिए (दो शब्द)	2X1=2
	(ऊ)	अन्य वचन रूप लिखिए (दो शब्द)	2X1=2
	(ए)	समानार्थक / पर्यायवाची शब्द लिखिए (दो शब्द)	2X1=2
	(ऐ)	विपरीतार्थक / विलोम शब्द लिखिए (दो शब्द)	2X1=2
VI	(अ)	अपठित गद्यांश / अवतरण	5X1=5
	(आ)	पत्रलेखन (दो में से एक)	1X5=5
	(इ)	अनुवाद (कन्नड़ / अंग्रेज़ी से हिन्दी में) (पाँच वाक्य)	5X1=5

नमूने का प्रश्न-पत्र

समय : ३ घंटे १५ मिनट कुल अंक : १००

सूचना : १) सभी प्रश्नों के उत्तर हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि में लिखना आवश्यक है।
२) प्रश्नों की क्रमसंख्या लिखना अनिवार्य है।

I) (अ) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए : 6X1=6

१) ठाकुर साहब के बड़े बेटे का नाम क्या था?
२) कुछ लोग आदतन क्या बोलते हैं?
३) महादेवी वर्मा को किसकी पत्तियाँ चुभ रही थीं?
४) पुलिस की कितनी गाडियाँ आयी थीं?
५) 'मूगा टेस्ट' किसे कहते हैं?
६) किसकी कोख में अमूल्य निधियाँ भरी हैं?

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 3X3=9

७) त्याग और सेवा के बारे में स्वामी विवेकानंद जी के क्या विचार हैं?
८) अंबेडकर जी के बाल्य जीवन का परिचय दीजिए।
९) निंदा की महिमा का वर्णन कीजिए।
१०) दौड़कर आते हुए उम्मीदवार ने क्या कहा?
११) रमेश ने बेहोशी का अभिनय क्यों किया?

II) (अ) निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहे? 4X1=4

१२) जल्दी से पका दो, मुझे भूख लगी है।
१३) वह रही मेरी अम्मा।
१४) 'कहिए, दिल जम गया या बच गया।'
१५) तुम भी खा लेना, गाय को भी खिला देना।

(आ) निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** का ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए : 2X3=6

१६) ...पंडिताइन चाची के न्यायविधान में न क्षमा का स्थान था न अपील का अधिकार।

१७) पर तुमने आजकल घर में यह क्या उपद्रव मचा रखा है?

१८) वह आकर्षण है सरल भक्ति का, प्रकृति के वैभव का।

१९) संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है।

III)(अ) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए : 6X1=6

२०) मधुर वचन से क्या मिटता है?

२१) जगत में जन्म लेने के बाद किससे नहीं डरना चाहिए?

२२) सीता की सखियाँ कौन हैं?

२३) कवि बच्चन का जीवन कैसे बीता?

२४) वीर किससे हाथ मिलाता है?

२५) प्रतिभा कहाँ बसती है?

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही **दो** प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 2X3=6

२६) मीराबाई की कृष्णभक्ति का वर्णन कीजिए।

२७) इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़नेवाली स्त्री का चित्रण कीजिए।

२८) बच्चन जी ने जग में क्या लुटाया और क्यों?

२९) नारी किस प्रकार से सृष्टि का श्रृंगार है?

(इ) ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए : 2X4=8

३०) जहाँ दया तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ छिमा तहँ आप॥

अथवा

मानुष हो, तो वही रसखानि बसौ ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पसु हौं, तो कहा बसु मेरो, चरौ नित नंद की धेनु मंझारन॥
पाहन हौं, तो वही गिरि कौ, जो धरयौ कर छत्र पुरन्दर धारन।
जो खग हौं, बसेरो करौं मिलि कालिंदी-कूल-कदम्ब की डारन॥

३१) मैं न कभी रोई जीवन में
रोता दिखा न यह संसार।
मृदुल प्रेम के ही गिरते हैं,
आँखों से आँसू दो चार॥

अथवा

जन्मों के जीवन मृत्यु मीत! मेरी हारों की मधुर जीत।
झुक रहा तुम्हारे स्वागत में मन का मन शिर का शिर विनीत।

IV)(अ) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए : 6X1=6

३२) शराबी के हाथ में कितने रुपये थे?
३३) पाँच वर्ष में युवक की कितनी पत्नियाँ मर गईं?
३४) प्रभा की सगाई किनके साथ हुई?
३५) चन्द्रप्रकाश का फ्लैट कहाँ था?
३६) प्रतिष्ठित साहित्य संस्था ने किसको सम्मानित किया?
३७) 'दोपहर का भोजन' कहानी के लेखक कौन हैं?

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 3X3=9

३८) शराबी के जीवन में मधुआ के आने के बाद क्या परिवर्तन आया?
३९) पहली पत्नी की मृत्यु पर युवक किस प्रकार विलाप करने लगा?
४०) 'खून का रिश्ता' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।
४१) चन्द्रप्रकाश का चरित्र-चित्रण कीज़िए।
४२) सिलिया ने मन ही मन क्या दृढ़-संकल्प किया?
४३) सिद्धेश्वरी के परिवार का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

V) (अ) वाक्य शुद्ध कीजिए : 5X1=5

४४) क) निंदा का ऐसी ही महिमा है।
ख) आपके बारे में मुझसे कोई भी बुरी नहीं कहता।
ग) सूरदास ने इसीलिए 'निंदा सबद रसाल' कही है।
घ) रोहन ने रोटी खाया।
ङ) कई महाविद्यालय खुला।

(आ) कोष्ठक में दिये गये उचित कारक चिन्हों से रिक्त स्थान भरिए :
(का, में, के, पर, की) 5X1=5

४५) क) उसके सीने ..... दर्द उठने लगता है।
ख) इसके साथ ही जोरों ..... पसीना छूटने लगता है।
ग) मितली ..... शिकायत भी हो सकती है।
घ) पास ..... डॉक्टर को बुला भेजें।
ङ) किताब को मेज़ ..... रख दो।

(इ) निम्नलिखित मुहावरों को अर्थ के साथ जोड़कर लिखिए : 4X1=4

४६)

१. दाँत पीसना	(a) कठोर होना
२. नौ दो ग्यारह होना	(b) भीख माँगना
३. आँचल पसारना	(c) क्रोध करना
४. दिल न पिघलना	(d) भाग जाना

(ई) निम्नलिखित वाक्यों को सूचनानुसार बदलिए : 3X1=3

४७) क) हम प्रतिदिन सबेरे तीन बजे उठते थे।
(वर्तमान काल में बदलिए)
ख) श्याम काम करता है। (भूतकाल में बदलिए)
ग) नेताजी ने भाषण दिया। (भविष्यत्काल में बदलिए)

(उ) अन्य लिंग रूप लिखिए : 2X1=2

४८) सम्राट, अध्यापिका

(ऊ) अन्य वचन रूप लिखिए : 2X1=2
४९) आँख, नदी

(ए) समानार्थक शब्द लिखिए : 2X1=2
५०) उल्लास, वृक्ष

(ऐ) विलोम शब्द लिखिए : 2X1=2
५१) वीर, अंधकार

VI)(अ) निम्नलिखित अनुच्छेद पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 5X1=5

५२) १७ वर्ष की आयु में भीमराव का विद्यार्थी जीवन में ही ९ वर्ष की रमाबाई के साथ विवाह हो गया। अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए भीमराव बंबई के एलफिंस्टन कालेज में दाखिल हो गए। उस समय एक अछूत के लिए यह बहुत अनोखी बात थी। मगर रामजी सूबेदार भीमराव को और पढ़ाने में कठिनाई महसूस करने लगे, तो केलुस्कर गुरुजी भीमराव को बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड जी के पास ले गए। भीमराव ने अपनी विद्वत्ता एवं बुद्धिमत्ता से महाराजा का दिल जीत लिया। महाराजा ने भीमराव की उच्च शिक्षा के लिए रु.२५/- मासिक छात्रवृत्ति स्वीकृत कर दी। समाज की क्रूर जाति-व्यवस्था उन्हें पग-पग पर पीड़ा पहुँचाती रही। वे संस्कृत पढ़ना चाहते थे, मगर अछूत होने के कारण उन्हें संस्कृत भाषा नहीं पढ़ने दी गई। दृढ़ इच्छाशक्ति के धनी भीमराव ने १९१२ में अंग्रेजी और पारसी विषयों के साथ बंबई विश्वविद्यालय से बी.ए. की परीक्षा पास की थी। वे बी.ए. की परीक्षा पास करने वाले पहले महार थे।

प्रश्न :

१) भीमराव का विवाह किसके साथ हुआ?
२) भीमराव बंबई के किस कालेज में दाखिल हो गए?
३) केलुस्कर गुरुजी भीमराव को किस महाराजा के पास ले गये?

४) महाराजा ने भीमराव की उच्च शिक्षा के लिए कितने रूपयों की छात्रवृत्ति स्वीकृत कर दी?
५) भीमराव जी ने बी.ए. की परीक्षा किस वर्ष पास की?

(आ)
५३) शैक्षणिक यात्रा का वर्णन करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए। 1X5=5

अथवा

चार दिन का अवकाश माँगते हुए अपने प्रधानाचार्य को एक प्रार्थना पत्र लिखिए।

(इ) हिन्दी में अनुवाद कीजिए : 5X1=5

५४) क) ಭಾರತವು ಶ್ರೀಮಂತ ಸಂಸ್ಕೃತಿಯ ದೇಶವಾಗಿದೆ.
India is a rich cultured country.

ख) ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳು ತಮ್ಮ ಗುರುಗಳಿಗೆ ವಿಧೇಯರಾಗಿರಬೇಕು.
Students should be obedient to their teachers.

ग) ಸುಮಿತ್ರಾನಂದನ್ ಪಂತ್‌ರವರು ಪ್ರಕೃತಿಪ್ರೇಮಿಗಳಾಗಿದ್ದರು.
Sumitranandan Pant was a lover of nature.

घ) ಕನ್ನಡವು ನಮ್ಮ ರಾಜ್ಯ ಭಾಷೆಯಾಗಿದೆ.
Kannada is our State language.

ङ) ಕಳೆದು ಹೋದ ಸಮಯವು ಎಂದೂ ಮರಳಿ ಬರುವುದಿಲ್ಲ.
Time lost is never regained.

* * * * * *

BLUE PRINT OF MODEL QUESTION PAPER

SUBJECT : HINDI (हिन्दी)
TEACHING HOURS : 120
COURSE / SUB. CODE : 03

BLUE PRINT OF MODEL QUESTION PAPER
YEAR : I P.U.C

DURATION : 3 HRS. 15 MINS.
MAX. MARKS : 100

OBJECTIVES →		NO.OF HOURS ALLOTTED	MARKS ALLOTTED	KNOWLEDGE			COMPREHENSION			EXPRESSION			APPRECIATION			TOTAL			Time required to answer the Questions
QUESTION CARRYING MARKS →				VSA	SA	ET	VSA	SA	ET	VSA	SA	ET	VSA	SA	ET	VSA	SA	ET	
UNITS/SUB UNITS ↓				1	3	4/5	1	3	4/5	1	3	4/5	1	3	4/5	1	3	4/5	
गद्य भाग																			प्रश्न– पत्र पढ़ने के लिए– 15 मिनट गद्य भाग–55 मिनट
1	बड़े घर की बेटी	5	5	1			1				1					2	1		
2	युवाओं से	4	3					1									1		
3	निन्दा रस	4	4	1				1*								1			
4	बिन्दा	4	5	1			1				1*					2			
5	बाबासाहेब डॉ.अंबेडकर	3	3					1									1		
6	दिल का दौरा और एनजाइना	4	1	1												1			
7	मेरी बद्रीनाथ यात्रा	4	4				1				1					1	1		
8	नालायक	4	4	1				1*								1			
9	राष्ट्र का स्वरूप	4	4	1							1*					1			
10	रिहर्सल	4	4				1	1								1	1		
पद्य भाग																			पद्य भाग–40 मिनट
11	कबीरदास के दोहे	3	4									1						1	
12	तुलसीदास के दोहे	3	1	1												1			
13	मीराबाई के पद	2	3					1									1		
14	शरण वचनामृत	3	1	1												1			
15	रसखान के सवैये	2	4									1*							
16	कुटिया में राजभवन	2	1	1												1			
17	तोड़ती पत्थर	2	3					1									1		
18	उल्लास	2	4									1						1	
19	तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाए	2	4	1				1*								1			
20	प्रतिभा का मूल बिन्दु	3	1	1												1			
21	तुम आओ मन के मुग्ध मीत	2	4									1*							
22	मत घबराना	2	1	1												1			
23	अभिनंदनीय नारी	2	3					1*											

	अपठित भाग (कहानियाँ)																		
24	मधुआ	3	4	1				1								1	1		अपठित भाग – 30 मिनट
25	श्मशान	3	4	1				1								1	1		
26	खून का रिश्ता	4	4	1				1*								1			
27	शीत लहर	3	4	1				1*								1			
28	सिलिया	3	4	1				1								1	1		
29	दोपहर का भोजन	4	4	1				1*								1			
	व्याकरण तथा रचना																		व्याकरण तथा रचना–45 मिनट
30	वाक्य शुद्धि	3	5							5						5			
31	रिक्त स्थान की पूर्ति	3	5				5									5			
32	मुहावरे	3	4	4												4			
33	काल परिवर्तन	3	3							3						3			
34	लिंग	2	2	2												2			
35	वचन	2	2	2												2			
36	समानार्थक शब्द	2	2	2												2			
37	विलोम शब्द	2	2	2												2			
38	अपठित गद्यांश	3	5				5									5			
39	पत्र लेखन	3	10									2(1)						1	पुनरावर्तन 10 मिनट
40	अनुवाद	4	5										5			5			
				30			14	24		08	06	13	05			57	30	13	
		120	140		30			38			27			05			100	MARKS	

TOTAL Hrs. MARKS

KNOWLEDGE = 30%
COMPREHENSION = 38%
EXPRESSION = 27%
APPRECIATION = 5%

WEIGHTAGE TO DIFFICULTY LEVEL
EASY = 33%
AVERAGE = 38%
DIFFICULT = 29%